(लेख नाम - वैदिक संहिताओं में प्रबन्ध सिद्धान्त) (269)

ISSN: 2349-5928

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE REVIEW

(An International Peer Reviewed Refereed Journal)

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Pandey
Associate Professor
Faculty of S.V.D.V.
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005

Humanities and Social Science Review

Vol. 4 No. 1 *ISSN 2349-5928* *January–June 2017*

CONTENTS

Sl. No.	Title	Name	Page No.
1.	नैषधीयचरितम्' महाकाव्य में वर्णित विविध दार्शनिक तत्त्व	धीरज कुमार मिश्र	1-14
2.	प्राचीन भारतीय इतिहास में विनिमय एवं भारमान : मुद्रा के विशेष सन्दर्भ में	प्रीति सिंह	15-18
3.	श्रीमद् भागवत के कतिपय लीला प्रसंग (दशम स्कन्ध के सन्दर्भ में)	मनोज कुमार	19-31
4.	शांति मूल्य और शांति के लिए शिक्षा	प्रभाकर पाण्डेय	32-36
5.	ग्रहस्पष्टीकरणप्रयोजनम्	नित्यानन्द ओझा	37-43
6.	Lieux de Théâtre à Bénarès	Aakash Dwivedi	44-52
7.	नैषधीयचरितम् में मानवदूत का प्रतीक : हंस	डॉ0 मधु सत्यदेव	53-58
8.	बुद्ध एवं गांधी की दार्शनिक पृष्ठभूमि	आनन्द शंकर तिवारी	59-64
9.	भारत में पाषाणकालीन मानव के रहन–सहन	नीरज कुमार गुप्ता	65-69
10.	प्राचीन भारतीय राजनीतिक इतिहास के स्त्रोत के रूप में बौद्ध एवं जैन धर्म के ग्रंथों का विश्लेषण	डॉ0 अवनीश कुमार सिंह	70-77
11.	अनसूया और प्रियंवरा की चारित्रिक भिन्नता– "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" के परिप्रेक्ष्य में	रति सिंह	78-81
12.	आचार्य नागार्जुन एवं प्रतीत्य समुत्पाद	निवेदिता सिंह	82-88
13.	कौशिकगृह्यसूत्र में विवाह संस्कार	डॉ. दीप लता	89-99
14.	समकालिक तथा परवर्ती आचार्यों पर अप्पय–दीक्षित का प्रभाव 'चित्रमीमांसा' के सन्दर्भ में	दुष्यन्त कुमार	100-106
15.	मम्मटकृत अर्थ दोषों में अनवीकृत से अश्लील पर्यंत 13 दोषों का निरूपण	रॉबिन कुमार	107-112
16.	वैदिक संहिताओं में प्रबन्ध सिद्धान्त	डॉ0 आचार्यबृहस्पतिमिश्रः	113-120

Humanities and Social Science Review, January-June 2017, Vol-04, No.-01

वैदिक संहिताओं में प्रबन्ध सिद्धान्त

डॉ आचार्यबृहस्पतिमिश्रः

"वेद" विश्वसाहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। ऋषियों ने इन्हें समस्त ज्ञान-विज्ञान का आदिस्रोत माना है। वेदों में उपलब्ध ज्ञान राशि इतनी विकसित, समग्र एवं सर्वातिशयी है कि प्रत्येक चिन्तन एवं अवधारणा को विज्ञान की कसौटी पर परख कर अनुगमन करने वाला जिज्ञासु, जब इसमें भौतिकवादी चिन्तन की अवथारणाओं को खोजने का प्रयत्न करता है, तो उसे निराश नहीं होना पड़ता । "प्रत्यक्ष" अथवा "सूत्ररूप" में अभिलिखित अवधारणा-विशेष उसे उपलब्ध हो ही जाती है। और हो भी क्यों न? वस्तुतः वैदिक-चिन्तन प्रतिभा-ज्ञान-सम्पन्न ऋषियों की अन्तःप्रज्ञा की अभिव्यक्ति है, जो न केवल मानव अपितु समस्त संसार के कल्याणकारक एवं शुभंकर तथ्यों को व्यक्त करता है।

महर्षि मनु ने **"सर्वज्ञानमयो हि सः**[2]" कह कर वेद की सर्वज्ञानमयता सिद्ध की है। विगत दो दशकों के भूमण्डलीकरण एवं आर्थिक विकास के दौर में प्रबन्धकीय अवधारणाओं को अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है। वैदिक वाङ्मय में इस महत्वपूर्ण विषय का प्रत्यक्षतः तो उल्लेख प्राप्त नहीं होता है, किन्तु अनेक वैदिक मन्त्रों में "सूत्ररूप" में उपलब्ध प्रबन्धकीय सिद्धान्त के निम्न बन्दुओं पर विचार करेंगे:—

1. **प्रबन्धकीय संवाद**
2. **अभिप्रेरणा**
3. **वैयक्तिक विकास**
4. **उचित लाभ एवं समान वितरण**
5. **सामाजिक उत्तरदायित्व**
6. **प्रबन्धकीय समन्वयन**

वेदों में प्रबन्धकीय संवाद—

प्रबन्ध में संवाद का अत्यधिक महत्व है। चाहे वह शीर्ष से निचले स्तर तक हो, या समान स्तर पर किया जाए। संगठन के कार्मिकों में विशेषकर अधिकारियों एवं अधीनस्थों के बीच अधिकांश समस्यायें संवाद सम्बन्धी त्रुटियों से उत्पन्न होती हैं। यह जानना बड़ा ही रोचक होगा कि वेद इस सम्बन्ध में अत्यन्त सजग है। वेद

---

[1] *प्राध्यापकः श्रीशक्ति संस्कृत महाविद्यालयः श्रीनयनादेवी जी, बिलासपुर, हि० प्र०*

[2] मनुस्मृति 2.62